

## श्री गुरु तेगबहादुर जी की वैराग बाणी का दार्शनिक संदर्भ

डॉ. गुरजीत कौर

नौवीं पातशाही श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी के 400 वर्षीय जन्म शताब्दी के अवसर पर उनके जीवन एवं व्यक्तित्व का स्मरण करना आज के अति-पदार्थवादी युग और असहिष्णुता के दौर में बेहद जरूरी प्रतीत होता है। गुरु तेगबहादुर साहिब की बाणी गुरुमत के अनुसार होते हुए भी अपने काव्य स्वभाव से थोड़ा भिन्नता रखती है। हर युग से सम्बन्धित पदार्थवाद में ग्रस्त समाज को सांसारिक मायाजाल से मुक्त होने का प्रवचन देने के साथ-साथ उन्होंने गुरुगद्दी पर बिराजमान हो कर धार्मिक असहिष्णुता वाली तत्कालीन मुगल सल्तनत को अहिंसक विरोध की मिसाल देते हुए अपने प्राणों का बलिदान दे दिया। गुरु तेगबहादुर साहिब के ऐसे निर्णय करने के पीछे जो प्रबल भावना और संकल्प कार्यशील था, वह स्वभाव उनके भीतर बचपन से ही मौजूद था। बचपन से ही उनकी मनो-वृत्ति विरक्ति स्वभाव वाली थी। इसका साक्ष्य श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में शामिल उनकी बाणी से भी मिल जाता है। इसलिए उनकी बाणी को वैराग बाणी भी कहा जाता है।

गुरु साहिब जी की बाणी बेशक वैराग्य स्वर में है लेकिन यह जीवन से विरक्ति का समर्थन नहीं करती। उनकी बाणी का एक प्रमुख गुण है कि यह बाणी नाशवान संसार की सत्यता को पहचान कर उससे आत्मिक मुक्ति का प्रवचन देती है। जैसे कि गुरु साहिब कहते हैं-

जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत।

जग रचना तैसे रची कहु नानक सुति मीत 1251

जो उपजिओ सो बिनसि है परो आजु कै कालि।

नानक हरि गुन गाइ ले छाडि सगल जंजाल 1521

इंसान को इस रचित संसार की सत्यता का बोध उसी प्रकारकरना चाहिए जैसे जल में बुलबुला होता है, जो बहुत तीव्रता से उत्पन्न होता है और उसी प्रकार समाप्त हो जाता है। उसका फिर कोई नामो-निशान नहीं रहता। ऐसे ही यह जगत है, जिस में अनेक प्रकार के जीव और पदार्थ उत्पन्न होते हैं और नष्ट हो जाते हैं। जो पैदा हुआ है उसको आज या कल खत्म होना ही है क्योंकि वह जगत में उत्पन्न नश्वर रचना मात्र है। ऐसी रचना के साथ जुड़ाव करना व्यर्थ है। अर्थात् यह रचित जगत एक स्वप्न के समान है, और जो भी पैदा होता है और मरता है वह नाशवान रचना असत्य है।

जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत।

कहि नानक थिरु ना रहै जिउ बालू की भीति। 49।

गुरु साहिब कहते हैं कि यह जगत रचना झूठ है। इसका अर्थ है कि इस संसार में जो भी दृष्टमान है वह ब्रह्म का ही पसास है जैसा कि वैदिक सिद्धांत द्वारा स्थापित किया गया है। पर यह ब्रह्म का पासास एक क्रम के अनुसार ही जीव-जगत के रूप में गतिमान रहता है। यह मिथ्य है अर्थात् संकल्पित है, यथा-अर्थ है। इस प्रकार जगत रचना को भी स्वप्न की भाँति देखना चाहिए, तभी यह दुःख कर कारण नहीं बनता। ऐसी दृष्टि से इंसान नश्वर जगत में डूबे बिना इससे पार उतर सकता है। मोह माया के भ्रम जाल से मुक्ति ही जीवन मुक्ति का मार्ग है।

जिउ सुपना अरु पेखना ऐसे जग कठ जानि।

इन में कछु साचो नही नानक बिनु भगवान। 231

घट घट में हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।

कहु नानक तिह भजु मना भठ निधि उतरहि पारि।12।

गुरु साहिब जीव और जगत की रचना का आधार ब्रह्म-सूत्र के अनुसार ही मानते हैं, जिस में एक ब्रह्म अथवा सृष्टि सृजन की व्यवस्था है और वह स्थिर है इसलिए सत्य है। ब्रह्म से जीव और जगत की उत्पत्ति होती है और विनाश होता है। जो भी जीव पदार्थ उत्पन्न होकर नष्ट हो जाता है वह अस्थिर या असत्य है। जिसे वैदिक सिद्धांत अनुसार सत् और ऋत कहा गया है। सत् अर्थात् ब्रह्म और ऋत अर्थात् जीव और जगत, जो कालचक्र अनुसार बनता बिगड़ता रहता है। ऋतुओं की तरह आना जाना इसका यथार्थ है। इसलिए हर पल प्रवर्तित होने वाला जीव जगत का क्रम असत्य या अस्थिर माना गया है। इसी सिद्धांत के अनुसार गुरु साहिब भी जगत और जीवों के कालबद्ध अस्तित्व को अस्थिर 'ऋत' मानते हैं जो कि जन्म-मरण के पहले और बाद में ब्रह्म का ही भाग हो जाता है। कालमयी अस्तित्व में रहते हुए वह नश्वर पिंड मात्र है जिस में पारब्रह्म रूपी चेतना उसको जीवन प्रदान करती है। इसको गुरु साहिब ने बहुत सुंदर शब्दों में समझाया है-

साधो रचना राम बनाई.रहाड।

इकि बिनसै इक असथिरु मानै अचरजु लखिओ न जाई ।।।

काम कोध मोह बसि प्रानी हरि मूरति बिसराई।

झूठा तनु साचा करि मानिओ जिउ सुपना रैनाई।।।

जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाई।

जन नानक जगु जानिओ मिथिआ रहिओ राम सरनाई 121212191

गुरु तेग बहादर जी भारतीय दर्शन के ब्रह्म, जीव और जगत के सम्बंध अनुसार मनुष्य की सृजना के रहस्य को समझते हैं। ब्रह्म रूपी सृजन शक्ति या व्यवस्था को सर्वोचय मान कर और उसके ही तत्वों से

उत्पन्न इस मानव-देह को पाकर भी अगर इंसान अपने आप को बहुत चतुर और अकलमंद समझने लगता है तो यह उसकी नासमझी ही है। क्योंकि जिन पाँच तत्वों से इंसान बना है, वह पंच-भूत अपने मूल तत्वों में विलीन हो जाते हैं और इन तत्वों की रचना द्वारा अपने ऊपर अहंकार करने नाले की कोई पहचान नहीं ननती। मर-मट में बसने वाली चेतना अर्थात् आत्मा अपने परम-तत्व में लीन हो जाती है। ऐसा ज्ञान हासिल हो जाने पर ही इस असत्य भव-सागर से पार जाया जा सकता है।

पांच तत को तनु रचिओ जानहु चतुर सुजान।

जिह ते उपजिओ नानका लीन ताहि मै मानु।।।।

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।

कछु नानक तिह भजु मना भड निधि उतरहि पारि।12।

ऐसे नाशवान जगत में सदैव रहने वाला कोई संबंध नहीं होता।

जन्म और मृत्यु के बीच में ही रिश्ते-नाते चलते हैं। यह सामाजिक व्यवहार है और इसके साथ भी मोह का बंधन नहीं रखना चाहिए। शरीर के द्वारा बने रिश्ते भी सदा रहने वाले नहीं हो सकते। लेकिन विपत्ति की स्थिति में आत्मिक सतह पर टिकाव सिर्फ एक रघुनाथ अर्थात् एक परमसत्य से ही मिलता है। इसके लिए जगत को नश्वर समझना और ब्रह्म को ही परमसत्य मानकर चलना और इसका अनुभव प्राप्त करना ही भव-सागर से पार जाने का एकमात्र रास्ता है-

सुख मै बहु संगी भए दुःख मै सगि न कोइ।

कछु नानक हरि भजु मना अति सहाई होइ। 321

संग सखा सभि तजि गए कोऊ न निबहिओ साथि।

कहु नानक इह बिपति मै टेक एक रघुनाथ।55।

स्वार्थ हित अपना अपना कह कर लोग अंत काल में अकेले रह जाते हैं जहाँ उनका कोई निस्वार्थ मित्र भी नहीं रहता। इसलिए मनुष्य अगर यह मान कर चलता है कि सिर्फ उसका हित ही सर्वोपरि है तो वह अपने जीवन को ही व्यर्थ गवा देते हैं और इसी भव-सागर रूपी संसार में लिप्त रह जाते हैं-

जगत महि झूठी देखी प्रीति।

अपने ही सुख सिउ सभ लागे किआ दारा किआ मीत ।।। रहाड।

मेरठ मेरठ समै कहत है हित सिउ बाधिओ चीत।

अंति कालि संगी नह कोऊ इह अचरज है रीति ।।।

मन मूरख अजहू नह समझत सिख दै हारिओ नीत।

नानक भउजलु पारि परै जठ गावै प्रभ के गीत

गुरु साहिब कहते हैं कि नश्वर जगत में स्थापित होने वाले सांसारिक संबंध भी किसी न किसी हित के लिए होते हैं। यह हित एक दूसरे से जुड़ी जरूरतों से निर्धारित होता है और जरूरत के अनुसार परिवर्तित हो जाता है। ऐसा संबंध या रिश्तेदारी भी स्वार्थ को ही बढ़ाती है। इस संदर्भ में उनका एक शब्द है-

बिरथा कहउ कउन सिठ मन की।

लोभि गसिओ दस हू दिस धावत आसा लागिओ धन की

सुख कै हेति बहुतु दुख पावत सेव करत जन जन की।

दुआरहि दुआरि सुआन जिउ डोलत नह सुध राम भजन की।।।

मानस जनम अकारथ खोवत लाज न लोक हसन की।

नानक हरि जसु किउ नहीं गावत कुमति बिनासै तन की

सांसारिक सुखों की प्राप्ति के लिए लोग बहुत मेहनत करते हैं, सुख के स्थान पर निरंतर दुःख ही प्राप्त कर रहे हैं। ऐसी स्थिति एक स्नान के जैसी हो जाती है जो द्वार-द्वार भटकता रहता है और कुछ हासिल नहीं कर पाता। इस तरह गुरु साहिब जीव-जगत के संदर्भ में इसकी नश्वरता पर जोर देते हैं और अपना ध्यान परम सत्य पर ही लगाने का उपदेश करते हैं। इसीलिए शब्द के अंत में गुरु साहिब ऐसे स्वार्थी जीवन और हितों को अकारथ या व्यर्थ बतलाते हैं। अगर मनुष्य अपने जीवन को परमात्मा से जोड़ कर अनुभव करते हैं और सभी लोगों में उसी तत्व को देख कर उनसे अपना संबंध और हित जोड़ते हैं तो वह अपना जीवन संभाल लेते हैं। अन्यथा निज-स्वार्थ में बिताया जीवन अकारण और व्यर्थ चला जाता है-

प्रीतम जानि लेहु मन माही।

अपने सुख सिउ ही जगु फाधिओ को काहू को नाही ।।। रहाउ।

सुख मै आनि बहुतु मिलि बैठत रहत चहू दिसि घेरै।

विपति परी सभ ही संगु छाडित कोऊ न आवत नेर।।।

घर की नारि बहुतु हितु जा सिउ सदा रहत संगि लागी।

जब ही हंस तजी इह कांइआ प्रेत प्रेत करि भागी।2।

इह बिधि को बिउहारु बनिओ है जा सिउ नेहु लगाइओ।

अंत बार नानक बिनु हरि जी कोऊ कामि न आइओ

गुरु तेग बहादर जी की बाणी बंधन मुक्ति का प्रवचन है। यह वैराग्य स्वर उदासीनता या संन्यास के लिए अग्रसर नहीं करता बल्कि झूठे सांसारिक बंधनों से मुक्ति का राह प्रशस्त्र करता है। उनकी बाणी में एक पक्ष जीवन के विनाशी जगत की रचनाओं की व्यर्थता को प्रगट करता है और दूसरा पक्ष इन बंधनों से मुक्ति के लिए पार-ब्रह्म की विराट चेतना में लीन होने का उपदेश देता है-

तनु धनु सपै सुख दीओ अरु जिह नीके धाम।

कहु नानक सुनु रे मना सिमरत काहि न रामु ।४।

जिहि माइआ ममता तजी सभ ते भइओ उदासु।

कछु नानक सुनु रे मना तिह घटि ब्रहम निवासु ॥४।

गुरु साहिब ऐसे मोह-ग्रस्त जगत में एक ऐसे वैराग की संकल्पना

करते हैं जिस में मनुष्य इन सभी सांसारिक प्रवृत्तियों से उदासीन हो कर ही परम सत्य की प्राप्ति के रास्ते पर जा सकता है।

बलु छुटकिओ बंधन परे कछु न होत उपाइ।

कहु नानक अब ओट हरि गज जिउ होहु सहाइ 1531

बलु होआ बंधन छुटे सभु किछु होतु उपाइ।

नानक सभु किछु तुमरै हाथ मै तुम ही होत सहाइ 1541

श्री गुरु तेग बहादर जी की बाणी मुख्य रूप से उपदेशात्मक है, वे मन को संबोधन करते हुए सभी लोगों को एक समान उपदेश देते हैं। जिस प्रकार उपरोक्त शब्दों से ही स्पष्ट हो जाता है कि पहले गुरु साहिब स्वयं के बलहीन हो जाने की बात रखते हैं। बंधनों को तोड़ने का कोई उपाय ढूँढने में असमर्थ हैं और परमात्मा से मदद की पुकार करते हैं। तदुपरांत ऐसी स्थिति से निकलने का रास्ता भी सूझा देते हैं। पर जब परमात्मा उपाय करता है तब बल भी आ जाता है और बंधन तोड़ने का उपाय भी मिल जाता है। इसलिए गुरु साहिब का उपदेश भी यही है के जहाँ मनुष्य हर प्रयत्न करके हार जाता है और बलहीन

महसूस करता है, जहाँ उस की मदद के लिए कोई सांसारिक शक्ति उपयोगी सिद्ध नहीं, वहाँ परमात्मा ही सहायक सिद्ध होता है। इस का भावार्थ है कि नश्वर जगत में सभी प्रकार के कार्यकलाप करने के बाद भी कोई जीवन उपयोगी साधन प्राप्त नहीं होता, लेकिन परमात्मा पर अपनी टेक रख कर सांसारिकता से भी उभरा जा सकता है। बंधन सिर्फ इस संसार से ही जुड़े हुए हैं, इसके पार कोई बंधन नहीं रहते और इसी

अवस्था की प्राप्ति यथार्थ जगत को मिथ्या या स्वप्न मन कर चलने से ही होती है। परम-चेतना का अनुभव ही बंधन मुक्ति की अवस्था है।

कहा नर अपनो जनमु गवावै।

माइआ मदि बिखिआ रसि रचिओ राम सरनि नही आवै ।।। रहाड।

इहु संसारु सगल है सुपनो देखि कहा लोभावै।

जो उपजै सो सगल बिनासै रहनु न कोऊ पावै।।।

मिथिआ तनु साचो करि मानिओ इह बिधि आपु बंधावै।

जन नानक सोऊ जनु मुकता राम भजन चितु लावै

गुरु तेग बहादर साहिब जी की वैराग बाणी का दार्शनिक पक्ष भी यही है कि संसारिकता के बंधनों से मोहभंग पैदा करना वैराग्य की एक अवस्था है। इसी से मुक्ति की तरफ अग्रसर हुआ जा सकता है। घट-घट में बसने वाली निराकार, निर्गुण और अकाल मूरत ही परमसत्य है। उस शक्ति को किसी भी नाम से अनुभव किया जा सकता है, इसलिए गुरु साहिब कहते हैं कि-

साधो इहु तनु मिथिआ जानउ।

या भीतरि जो रामु बसतु है साचो ताहि पछानो ।।। रहाड।

इहु जगु है संपति सुपने की देखि कहा ऐडानो।

संगि तिहारै कछू न चालै ताहि कहा लपटाना ।।।

उसतति निंदा दोऊ परहरि हरि कीरति उरि आनो।

जन नानक सभ ही मै पूरन एक पुरख भगवानो ।

जीव-जगत को ऐसी वैराग्य दृष्टि से देखने के अभिप्राय इससे उदासीन होना या विरक्ति मात्र नहीं है, बल्कि इसमें रहते हुए ही संसारिकता के बंधनों से वैराग्य भाव रखना। इसके लिए सभी बंधन छोड़ने के बाद ही आत्मानंद की प्रतीति होती है, और यह अवस्था किसी-किसी गुरुमुख को ही प्राप्त होती है, जिस के ऊपर गुरु की कृपा हो-

माई मै धनु पाइओ हरि नामु।

मनु मेरो धावन ते छूटिओ करि बैठो बिसरामु ।।।रहाड।

माइआ ममता तन ते भागी उपजिओ निरमल गिआनु ।

लोभ मोह एह परसि न साकै गही भगति भगवान ।।।

जनम जनम का संसा चूका रतनु नामु जब पाइआ।

त्रिसना सकल बिनासी मन ते निज सुख माहि समाइआ ।2। \जा कउ होत दइआलु किरपा निधि सो  
गोबिंद गुन गावै।

कहु नानक इह बिधि की सपै कोऊ गुरमुखि पावै

यही स्थिति वैराग भाव के उपरांत जीव-जगत के बारे में अनुभव करनी चाहिए और लोभ-मोह के बंधन से भी मुक्त होना चाहिए। गुरु तेग बहादर साहिब अपनी वैराग बाणी द्वारा सांसारिक बंधनों से मुक्त जीवन जीने का उपदेश देते हैं। ऐसा मनुष्य ही उत्तम भाग्य को प्राप्त करता है-

जिहि बिखिआ सगली तजी लीओ भेख बैराग।

कहु नानक सुनु रे मना तिह नर माथै भागु ॥17।